श्री विष्णुजी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ.....
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का।
सुख संपत्ति घर आवे , कष्ट मिटे तन का॥ ॐ.....
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ॐ.....
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ.....
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ.....
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती ॥ॐ ...
दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करूणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ.....
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॐ.....
शाम सुन्दर जी की आरति, जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥ ॐ .....